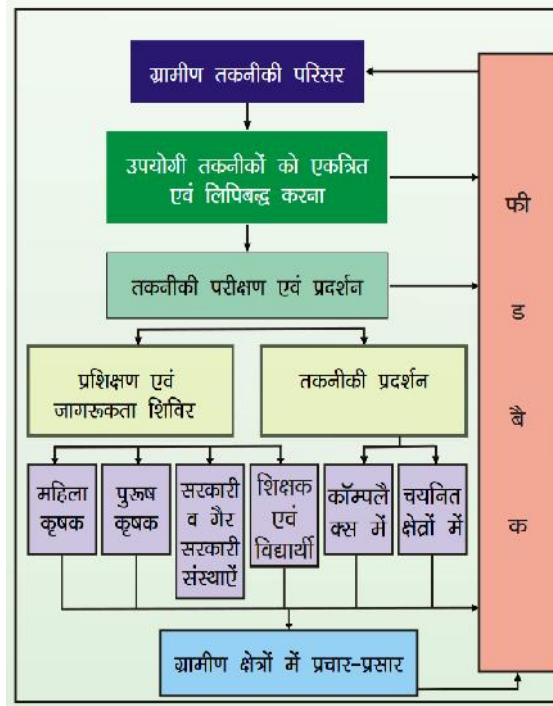


ग्रामीण तकनीकी परिसर

हिमालय पर्वतीय क्षेत्रों की अधिकांश जनसंख्या आजीविका हेतु कृषि, पशुपालन, बागवानी आदि कार्यों पर निर्भर रहती है। इन कार्यों को आज भी परम्परागत रूप से ही सम्पादित किया जाता है जिसमें स्थान विशेष के अनुरूप सुधार की आवश्यकता है। इस दिशा में विभिन्न संस्थाओं द्वारा समय-समय पर विकसित की गई कम लागत एवं पर्यावरण हेतु अनुकूलित तकनीकों के उपयोग से कृषकों की दिनचर्या में जहाँ एक ओर काम के बोझ को कम किया जा सकता है वहीं दूसरी ओर आय में वृद्धिकरते हुए संसाधनों का समुचित रख-रखाव भी किया जा सकता है। प्रायः यह देखा गया है कि इन तकनीकों का प्रसार हिमालय क्षेत्रों में आशातीत ढंग से नहीं हो पाया है। अतः इस उद्देश्य से संस्थान द्वारा ग्रामीण तकनीकी परिसर का आरम्भ वर्ष 2001 में जैव तकनीकी विभाग, भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से किया गया। तत्पश्चात वर्ष 2004-05 से यह परिसर संस्थान की एक स्ववित्तपोषित परियोजना के रूप में कार्य कर रहा है। इस परिसर द्वारा सरकारी, अर्द्धसरकारी संस्थाओं एवं अन्य वर्गों को विभिन्न माध्यमों से उत्पादन वृद्धि, आर्थिक विकास, आजीविका वृद्धि, उपयोगिता वृद्धि, आदि विषयों का प्रशिक्षण एवं नमूने प्रदर्शित कर विस्तृत जानकारी प्रदान की जाती है साथ ही आर्थिक रूप से कमजोर, उद्यमी, परिश्रमी व्यक्तियों को संसाधन भी प्रदान किये जाते हैं। यह परिसर अल्मोड़ा-कौसानी मोटर मार्ग पर अल्मोड़ा से 10 किलोमीटर की दूरी पर कोसी में स्थित है।

कार्य प्रणाली : विभिन्न लक्ष्य समूहों को निरन्तर लाभ पहुँचाने हेतु तकनीकी परिसर की एक निश्चित कार्य प्रणाली है



संस्थान: गो0 ब0 पन्त राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत् विकास संस्थान की स्थापना पं0 गोबिन्द बल्लभ पन्त के जन्म-शताब्दी वर्ष - 1988 के अगस्त माह में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कोसी-कटारमल में एक स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में हुई। इस संस्थान का उद्देश्य हिमालय क्षेत्रों में लोगों को वैज्ञानिक जानकारी सुलभ कराना, संगठित प्रबन्ध नीति विकसित करना, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में अपनी विषयगत विज्ञान से लोगों को अवगत कराना, तथा उन्हें जागरूक करना एवं पर्यावरणीय दृष्टि से सुदृढ़-सतत् विकास सुनिश्चित करना है।

लक्ष्य :

हिमालयी पर्वतीय क्षेत्रों के लक्ष्य समूहों को संसाधनों के समुचित उपयोग एवं रख-रखाव का कार्यकारी एवं व्यवहारिक नमूना प्रदर्शित कर उनके दैनिक जीवन में निपुणता लाते हुए कार्य भार में कमी, स्वास्थ्य सुधार, आर्थिक मजबूती एवं पर्यावरण संवर्धन हेतु तकनीकी ज्ञान प्रदान करना।

उद्देश्य

- । पर्वतीय क्षेत्रों हेतु परंपरागत एवं आधुनिक तकनीकों का संकलन कर ग्रामीण परिवेश हेतु लिपिबद्ध करना
- । विभिन्न तकनीकों का परीक्षण कर स्थान विशेष हेतु आवश्यक सुधार करना
- । परीक्षित तकनीकों को परिसर एवं चयनित ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदर्शित करना
- । चुने गए लक्ष्य समूहों को तकनीकी ज्ञान एवं आवश्यक सामग्री आदि प्रदान कर आजीविका संवर्धन हेतु सक्षम बनाना

1- मरि कनु of) ग्रं प; फुर रदुहfd; क

पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि भूमि की कमी, कृषि की वर्षा पर निर्भरता, सिंचाई के साधनों का अभाव, रासायनिक खादों का सीमित उपयोग, शीत ऋतु में तापमान की कमी आदि के परिणामस्वरूप जहाँ एक ओर वांछित उत्पादन प्राप्त नहीं किया जा सकता है वहीं दूसरी ओर शीत ऋतु में कृषि भूमि का एक भाग परती छोड़ने के कारण अनुकूलतम उपयोग नहीं हो पाता है। संरक्षित खेती एवं विभिन्न प्रकार के जैविक खादों के उपयोग से सीमित भूमि में भी वांछित उत्पादन बड़े पैमाने पर प्राप्त किया जा सकता है। लघु शकों द्वारा संरक्षित खेती तथा जैविक खादों को अपनाकर सीमित भूमि में वर्ष भर मौसमी एवं बेमौसमी सब्जी का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जा सकता है। एक कृषक 40'x16'x12' पौलीहाउस से एक वर्ष में लगभग 75 हजार रुपये की आमदनी अर्जित कर सकता है। इस प्रकार कृषि भूमि का कोई भी भाग परती नहीं छोड़ना पड़ेगा। जिससे एक ओर रासायनिक खादों से

होने वाले दुष्परिणामों से बचा जा सकता है वहीं दूसरी ओर स्वयं की आवश्यकता पूर्ति के साथ-साथ आर्थिक विकास में भी सहयोग मिलता रहेगा। उत्पादन वृद्धि हेतु चयनित तकनीकियाँ इस प्रकार हैं—

- | | |
|---------------|-------------------------------|
| । पौलीहाउस | । जैविक खाद |
| । पौलीपिट | । वर्मी खाद |
| । पौलीटनल | । हरी खाद |
| । पौलीट्रेन्च | । जैव उर्वरक (बायोफर्टिलाइजर) |



2- vkfkd fodkl gq p; fur rdulfd; ka

पारम्परिक रूप से पर्वतीय कृषक मुख्यतः खाद्यान्नों का ही उत्पादन करते हैं जिससे उनकी केवल 6-8 माह तक की खाद्य पूर्ति हो पाती है। वर्ष के शेष माह की खाद्य पूर्ति एवं अन्य दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उन्हें अन्य व्यवसायों जैसे नौकरी, मजदूरी आदि द्वारा अर्जित आय पर निर्भर रहना पड़ता है। जिसके लिए इन व्यवसायों हेतु उन्हें अन्य क्षेत्रों में पलायन करना पड़ता है। जिससे घर-परिवार का समस्त कार्यभार महिलाओं पर आ जाता है। अतः इस कार्यभार का बोझ बच्चों मुख्यतः लड़कियों पर भी आ जाता है जिससे उन्हें छोटी सी आयु में ही घर गृहस्थी के कार्य सम्पादित करने पड़ते हैं। पर्वतीय क्षेत्र अनेक प्रकार की नकदी फसलों हेतु आदर्श जलवायु प्रस्तुत करता है। अतः कृषक इन फसलों का उत्पादन कर छोटे से भू-भाग में भी पर्याप्त आय प्राप्त कर सकते हैं जिससे आर्थिक विकास के साथ-साथ महिलाओं पर पड़ने वाला अतिरिक्त कार्यभार भी कम किया जा सकता है। इसका सबसे बड़ा लाभ महिलाओं को मिलेगा जिससे उनकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य में निरन्तर सुधार आएगा। एक कृषक ने लगभग 1200 मीटर की ऊँचाई में एक हेक्टेयर भूमि से एक वर्ष में 3234-3656 किलोग्राम मछली, 3181-3333 अण्डे एवं 90-98 किलोग्राम मुर्गी का माँस पैदा किया है

- | | |
|-------------------------|--------------------------|
| । नकदी फसलें | । उद्यानीकरण |
| । फूलों की खेती | । पौधशाला विकास |
| । जड़ी-बूटी उत्पादन | । मशरूम उत्पादन |
| । सब्जी उत्पादन | । मधुमक्खी पालन |
| । समन्वित मत्स्य पालन | । परम्परागत खाद्य पदार्थ |
| । फल संरक्षण प्रसंस्करण | |



3- vktlfodk of) es l gk; d rdulfd; kq

पर्वतीय क्षेत्रों के निवासी आजीविका निर्वाह हेतु किसी एक व्यवसाय पर निर्भर न होकर अनेक व्यवसाय साथ-साथ करते हैं जैसे कृषि, नौकरी, पशुपालन, मजदूरी, आदि क्योंकि पारम्परिक रूप से सम्पादित किये गये किसी एक व्यवसाय से इतनी आमदनी प्राप्त नहीं हो सकती है कि वर्षभर परिवार का पूर्ण खर्च सुचारु रूप से चलाया जा सके। इन व्यवसायों को लाभकारी बनाने हेतु कुछ अन्य सहायक कार्य भी आवश्यक है ताकि मुख्य व्यवसाय से अधिकाधिक लाभ अर्जित किया जा सके। इस प्रकार के सहायक कार्यों से प्रत्यक्ष लाभों की तुलना में परोक्ष लाभ अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अतः इन तकनीकों को अपनाकर जहां एक ओर आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त की जा सकती हैं वहीं दूसरी ओर भूमि व पानी जैसे संसाधनों का संरक्षण भी किया जा सकता है। इनमें से अधिकांश तकनीकों को अपनाकर कई वर्षों तक निरन्तर आय/लाभ प्राप्त किया जा सकता है जो निम्न प्रकार हैं।

- | | |
|-------------------------------|--------------------------------|
|) चारापत्ती एवं चारागाह विकास |) बहुउपयोगी वृक्षारोपण |
|) कृषि वानिकी |) आकर्षक कलाकृतियाँ |
|) जैविक घेरबाड़ |) अल्पना आलेखन सिलाई एवं बुनाई |





4- mi ; kfxrk of) , oa vU; I gk; d rduhfd; kq

सर्वविदित है कि यदि किसी वस्तु को जिस रूप में वह पाया जाता है उसी रूप में उपभोक्ता तक पहुँचाने पर पर्याप्त लाभ नहीं मिल पाता है, साथ ही उसकी उपलब्धता भी सीमित समय तक रहती है। यदि तकनीकी ज्ञान से उस वस्तु का रूप परिवर्तित कर दिया जाय तो वह अधिक लाभ प्रदान करेगा। इन तकनीकों को अपनाकर आवश्यक संसाधनों को लम्बे समय तक रखा जा सकता है तथा कुछ तकनीकों से वांछित वस्तु आवश्यक मात्रा में प्राप्त की जा सकती है। कुछ तकनीकों अपनाकर जहाँ दैनिक जीवन की समस्याओं का समाधान हो सकता है वहीं पानी, ईंधन, चारा, आदि मुख्य समस्याओं के समाधान में भी सहायता मिलेगी।

) बॉस उत्पादन
) जल एकत्रण

) शून्य ऊर्जा शीत कक्ष
) बायोब्रिकेट एवं बायोग्लोब्यूल



enyHkr I fo/kk, a

परिसर का वातावरण ग्रामीण क्षेत्रों के अनुरूप निर्धारित किया गया है ताकि सूदूर अंचलों से आने वाले कृषकों को सामंजस्य स्थापित करने में असुविधा न हो।

-) विभिन्न संस्थानों एवं संस्थाओं द्वारा विकसित पर्वतीय क्षेत्रों हेतु उपयोगी तकनीकों का संग्रह।
 -) उपयोगी तकनीकों के कार्यकारी व व्यावहारिक नमूनों का सरल प्रदर्शन।
 -) आधुनिक दृश्य-श्रव्य साधन युक्त व्याख्यान कक्ष
 -) लगभग 150 व्यक्तियों की क्षमता वाला केन्द्रीय हाल।
 -) प्रशिक्षणार्थियों हेतु आवासीय सुविधा एवं भोजन कक्ष।
 -) लक्ष्य समूहों को तकनीकी प्रदर्शित क्षेत्रों के भ्रमण हेतु वाहन व्यवस्था।
 -) कुशल, प्रशिक्षित प्रशिक्षक एवं विषय विशेषज्ञ।

mi yfc/k; kW

-) विभिन्न विकास परियोजनाओं (हरियाली, जलागम प्रबन्ध, डी० पी० ए० पी०, प० स० व० भू० वि० योजना, आई० डब्लू० डी० पी०, स्वजल, महिला डेरी विकास, राज्य बायोटेक्नोलॉजी प्रोग्राम, डी० ए० एस० पी०, एल० आई० पी० एच०, स्पेशल कम्पौनेन्ट, नाबार्ड, विकेन्द्रीत जलागम प्रबन्धन,

आदि) को लाभकारी बनाने हेतु कृषकों, विभिन्न पदाधिकारियों, एवं विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है एवं समय-समय पर आने वाली कठनाईयों का निवारण भी किया गया।

- ज) परिसर द्वारा कुल 3270 गाँवों में 310 पौलीहाउस, 30 मत्स्य पालन तालाब, 53 जल एकत्रण तालाब, 163 बायोक्म्पोस्ट पिट, 93 वर्मी कम्पोस्ट, आदि का प्रदर्शन किया गया है एवं जैव ईंधन हेतु सॉचे विभिन्न संस्थाओं/संगठनों को उपलब्ध कराये गये।
- ज) परिसर द्वारा विभिन्न गाँवों में 10 हजार से अधिक फलदार वृक्षों एवं 25 हजार से अधिक बहुपयोगी वृक्षों के पौधों का रोपण करवाया गया है।
 - ज) प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त गैर सरकारी संस्थाएँ भी इस कार्य को आगे बढ़ा रही हैं।
- ज) प्रशिक्षण प्राप्त कृषक इन तकनीकों अपना कर स्वयं लाभान्वित होने के साथ-साथ अन्य ग्रामीण निवासियों को भी इन तकनीकों को अपनाने के लिए उत्साहित कर रहे हैं।
 - ज) यह कार्यक्रम संस्थान के अन्य क्षेत्रीय इकाईयों में भी प्रारम्भ किया गया है।

ekpl 2001 l s ekpl 2019 rd gq if'k{k.k f'kfoj`adh tkudkjh

लक्ष्य समूह	प्रशिक्षण शिविर			
	1 दिवसीय	2 दिवसीय	3 -5 दिवसीय	कुल
प्रशिक्षक	20	02	01	23
कृषक	53	19	193	265
गैर सरकारी संस्थाएँ	77	13	04	94
सरकारी संस्थाएँ	38	05	15	58
विद्यार्थी	55	02	-	57
सैनिक	11	-	04	15
कुल प्रशिक्षण	254	41	217	512

आभार: उन समस्त आविष्कारकों, विकासकर्ताओं आदि का हम हृदय से धन्यवाद अदा करते हैं जिन्होंने इन समस्त तकनीकों का आविष्कार किया।

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें

डा० आर०एस०रावल,निदेशक

या

डा० हर्षित पन्त,

वैज्ञानिक एवम् नोडल अधिकारी

(ग्रामीण तकनीकी परिसर)

गो.ब.पन्त राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवम् सतत् विकास संस्थान

कोसी-कटारमल,अल्मोड़ा-263643

उत्तराखण्ड, भारत दूरभाष - 05962-241011, 241041